International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |Thomson Reuters Researcher ID: L-5236-2015

महाकवि कालिदास के काव्य में प्रकृति चित्रण

डॉ विनोद कुमार पांडेय , एसोसिएट प्रोफेसर ,
संस्कृत विभाग , के महाविद्यालय .के .जी ., मुरादाबाद

महाकवि कालिदास प्रकृति के उपासक हैं। वे प्रकृति के अन्नय प्रेमी हैं , उन्होंने अंत: प्रकृति एवं बाह्य प्रकृति दोनों का चित्रण किया है। उनका यह चित्रण आत्मानुभूति एवं सूक्ष्म निरीक्षण पर आधारित है। यद्यपि महाकवि ने कहीं कहीं– प्रकृति का भयावह रूप भी चित्रित किया , किंतु प्रकृति का सुकुमार रूप उन्हें अधिक प्रिय है

प्रकृति का चित्रण कालिदास ने अपने समस्त काव्यों एवं नाटकों में प्रकृति का निरुपण तो किया : ही है, किंतु स्वतंत्र रूप से प्रकृति के चित्रण के लिए ऋतुसंहार की रचना की। ऋतुसंहार में कवि ने बाह्य प्राकृतिक सौन्दर्य के निरुपण की अपेक्षा मानव मन पर पड़ने वाले प्रभावों का वर्णन– अधिक किया है, फिर भी ऋतुओं का स्वतंत्र चित्रण उनके प्रकृति प्रेम का द्योतक है। मेघदूत में–

तो कवि ने प्रकृति एवं मानव में तादात्म्य स्थापित करदिया है। पूर्वमेघ में प्रधानतया प्रकृति के बाह्य रूप का चित्रण है , किंतु उसमें मानवीय भावनाओं का संस्पर्श है , मेघदूत तो वर्षा ऋतु की ही उपज है। वहाँ वर्षा से प्रभावित होने वाले समस्त जड़ चेतन पदार्थों का निरूपण है। मेघ– जिस मार्ग से होकर आगे निकल जाता है–जिस उस–उस मार्ग में अपनी छाप छोड़ जाता है–

नीपं दृष्ट्वा हरितक पशं केसरैरर्द्धरूढै-
रा वर्भूतप्रथममुकुलाकन्दलीश्चानकच्छम।:
जग्ध्वारण्येष्व धकसुर भं गन्धमाध्राय चोर्वया।:
सारङ्गास्ते जललवमुचसूचयिष्यंति मार्गम॥:

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

जल बरसने के कारण पुष्पित कदम्ब को भ्रमर मस्त होकर देख रहे होंगे , प्रथम जल पाकर मुकुलित कन्दली को हरिण खा रहे होंगे और गज प्रथम वर्षाजल के कारण पृथिवी से निकलने वाली गन्ध सूँघ रहे होंगे भिन्न यिाओं को देखकर मेघ के गमन मार्ग का– इस प्रकार भिन्न– अनुमान हो जाता है। प्रकृति से मनुष्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है।:स्वत यही कारण है कि वह मनुष्य के अंतर्करण को प्रभावित करती है। मेघदूत में कवि ने इसी तथ्य को उजागर किया –

मेघालोके भवति सु खनोस्प्पन्यथावृत्ति चेत।:
कण्ठाश्लेषप्रणयिनि जने कं पुनर्दूरसंस्थे॥

मेघ को देख लेने पर तो सुखी अर्थात संयोगी जनों का चित्त कुछ का कुछ हो जाता है फिर वियोगी लोगों का क्या कहना। कालिदास ने प्रकृति को मनुष्य के सुख ख में सहभागिनी:दु– झुका कर सीता के अपहरण का मार्ग– निरूपति किया है। विरही राम को लताएँ अपने पत्ते झुका बताती हैं, मृगियाँ दर्भाकुर चरना छोड़कर बड़ीबड़ी ऑखें दक्षिण दिशा की ओर लगाये ट–ुकुर–टुकुर ताकती रह जाती हैं।

प्रकृति चेतन एवं भावनायुक्त पक्षी आदि–कालिदास प्रकृति को चेतन एवं भावनायुक्त पाते हैं। पशु : तो चेतनवत व्यवहार करते ही है, सम्पूर्ण चराचर प्रकृति भी मानव की भाँति व्यवहार करती दिखायी देती हैं। महाकवि ने मेघ को दूत बनाकर धूम , अग्नि, जल, पवन के सम्मिश्रण रूप जड़ पदार्थ को मानव बना दिया है। वे प्रकृति में न केवल मानव की बाह्या आकृति का आरोप करते हैं अपितु उसमें सुख प्रेमी अथवा: खादि भावों की भी सम्भावना करते हैं। वे प्रकृति को प्राय:दु : प्रेमिका के रूप में देखते हैं। मेघदूत में उजयि◌नी की ओर जाते हुए मेघ को मार्ग में पड़ने वाली निर्विन्ध्या नदी विभिन्न हाव–भाव से आकृष्ट करेगी–

वी चक्षोभस्तनित वहगश्रे ण काञ्चीगुणाय।:
संसर्पत्य।।:स्ख लतसुभगं द र्शतावर्तनाभे:
नि र्वन्ध्याय।:प थ भव रसाभ्यंतर :
संनिपत्य स्त्रीणामाद्यं प्रणयवचनं वभ्रमो हि प्रयेषु॥

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

हे मेघ तरंगों के हलचल के कारण शब्दायमान पक्षियों की पंक्ति रूपी करधनी को धारण करने ! वाली, स्खलित प्रवाह के कारण सुन्दरतापूर्वक बहने वाली अर्थात मस्त होकर चलने वाली और भँवर रूप नाभि को दिखाने वाली निर्विन्ध्या नदी रूपी नायिका से मिलकर तुम रस अवश्य प्राप्त करना, क्योंकि कामिनियों का हाव भाव प्रदर्शन ही रतिप्रार्थना वचन होता है।– महाकवि कालिदास ने प्रकृति के श्रेष्ठ तत्त्वों को ग्रहण कर उनकी अप्रस्तुत रूप में योजना की है। वे पात्रों को उपस्थित करने के लिए प्रकृति के सुन्दर तत्त्वों से सादृश्य स्थापित करते हैं। रघुवंश में राजा रघु के मुख सौन्दर्य के वर्णन के लिए वे प्रकृति के सुन्दरतम एवं प्रसिध्द उपमान चन्द्र– का आश्रय लेते हैं।

प्रसादसुमुखे तस्मिंश्चन्द्रे च वशदप्रभे।
तदा चक्षुष्मतां प्रीतिरासीत्समरसा द्वयो:

शरद ऋतु में रघु के खिले हुए मुख और उवल चन्द्रमा को देखकर दर्शकों को एक सा आनन्द– लता से की है: मिलता था। कवियों ने नारी के शरीर की तुलना प्राय, किंतु कुमारसम्भव में कालिदास पार्वती को चलती – फिरती एवं फूलों से लदी लता के रूप में देखते हैं–

आवर्जिता कञ्च्ाि्दिव स्तनाभ्यां वासो वसाना तरुणार्करागम।
पर्याप्तपुष्पस्तबकावनम्रा सञ्चारिणी पल्लवनी लतेव॥

प्रकृति का उपदेशिका रूप महाकवि कालिदास प्रकृति को उपदेशिका रूप में भी पाते हैं। वे : – स्थान पर उल्लेख करते हैं जो मानव जीवन का मार्ग– प्रकृति से प्राप्त होने वाले सत्य का स्थान निर्देश करती है एवं आदर्श उपस्थापित करती है। मेघ बिना कुछ कहे चातकों को वर्षा जल प्रदान कर उनका उपकार करता है–

नि।:शब्दोस्पि प्रदिश स जलं या चतश्चातकेभ्य:
प्रत्युक्त हि प्रणयिषु सतामीप्सितार्थयैव॥

पपीहे के जल माँगने पर मेघ बिना उत्तर दिये उन्हें सीधे जल दे देता है। सजनों का यह स्वभाव होता है कि जब उनसे कुछ माँगा जाय तो वे मुँह से कुछ कहे बिना , काम पूरा करके ही उत्तर दे देते हैं। रघुवंश में कालिदास को जल के स्वभाव से शिक्षा मिलती है। जल तो प्रकृत्या शीतल है ,

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

उष्ण वस्तु के सम्पर्क से भले ही कुछ क्षण के लिए जल में उष्णता उत्पन्न हो जाए। इसी प्रकार महात्मा भी प्रकृति से क्षमाशील होते हैं, अपराध करने पर वे कुछ क्षण के लिए ही उद्विग्न होते हैं–

स चानुनीतप्रणतेन पश्चान्मया मह र्षमुदतामगच्छत।:
उष्णत्वमग्न्यातपसम्प्रयोगाच्छैत्यं हि यत् सा प्रकृतिर्जलस्य॥

प्रकृति के सहज सौन्दर्य , मानवीय राग, कोमल भावनाओं तथा कल्पना के नवनवोन्मेष का जो रूप कुमारसम्भव के अष्टम सर्ग में मिलता है, वह भारतीय साहित्य का शिखर कहा जा सकता है। कवि ने सन्ध्या और रात्रि का वर्णन हिमालय के पावन प्रदेश में शिख के गरिमामय वचनों के द्वारा पार्वती को सम्बोधित करते हुए कराया है , और प्रसंग, पात्र, देशकाल के अनुरूप प्रकृति का इतना उदात्त और कमनीय वर्णन विश्व साहित्य में दुर्लभ कहा जा सकता है। पश्चिम में डूबते सूर्य की रश्मियां सरोवर के जल में लम्बीलम्बी होकर प्रतिबिम्बित हो रही है–, तो लगता है कि अपनी सुदीर्घ परछाइयों के द्वारा विवस्वान भगवान ने जल में सोने के सेतुबन्ध रच डाले हो। वृक्ष के शिखर पर बैठा मयूर ढलते सूर्य के घटते चले जाते सोने के जैसे गौरमण्डलयुक्त आतप को बैठा पी रहा है। पूर्व में अंधेरा बढ़ रहा है, आकाश के सरोवर से सूर्य ने जैसे आतपरूपी जल को सोख लिया, तो इस सरोवर के एक कोने में जैसे कीचड़ ऊपर आ गया हो। सूर्य के किरणों का जाल समेट लिया है, तो हिमालय के निर्झरो पर अंकित इन्द्रधनुष धीरे धीरे मिटते जा रहे हैं। कमल– का कोश बन्द हो रहा है, पर भीतर प्रवेश करते भ्रमर को स्थान देने के लिए कमल जैसे मुंदते – मुंदते ठहर गया है। अस्त होते सूर्य की किरणें बादलों पर पड़ रही हैं , उनकी नोंकें रक्त, पीत और कपिश हो गयी हैं, जैसे सन्ध्या ने पार्वती को दिखाने के लिये तूलिका उठा कर उन पर रंग–

बिरंगी छवियाँ उकेर दी हों। अस्त होते सूर्य ने अपना आतप सिंहों के केसर और वृक्षों के किसलयों को जैसे बाँट दिया है। सूर्यास्त होने पर तमालपंक्ति सन्ध्यारूपी नदी का तट बन जाती है और धातुओं का रस उसका जलप्रवाह ऊपर , नीचे,आगे, पीछे जहाँ देखो अंधेरा ही ऑखों में भरता है, तिमिर के उल्ब में लिपटा संसार जैसे गर्भस्थ हो गया हो। कालिदास की कल्पना खेतों और खलिहानों में रमती है , प्रकृति के सहज सौन्दर्य का मानव – सौन्दर्य से और कृत्रिम साज–

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

सजा से उत्कृष्ट पाती है। कुमारसम्भव में चन्द्रमा की किरणों के लिये जौ के ताजा अंकुर का –उपमान देकर उन्होंने मानों स्वर्ग को धरती से मिला दिया है

शक्यमोष धपतेर्नवोदय।:कर्णपूरचनाकृते तव।
अप्रगत्भयवसू चकोमलाश्छेत्तुमग्रनखसम्पुटैकरा॥:

कहीं पर शिव को वृक्षों की टहनियों से बिछल छन कर धरती पर गिरती– कर छन (फिसल) चाँदनी के थक्के वृक्षों से टपक पड़े फूलों से लगते हैं, जिन्हें उठा उठा कर पार्वती के केशों में– सजाने का उनका मनहोने लगता है–

शक्यमङ्गु ल भरुत्थितैरध।:शा खना पतितपुष्पपेशलै:
पत्रजर्जरश शप्रभालवैरे भरुत्कचयितुं तवालकान॥

प्रकृति में मानवीय राग , करुणा और ह्रदय की कोमलता के दर्शन कालिदास अपनी विश्वदृष्टि के द्वारा ही कर सके हैं। अंधेरा रात्रि रमणी का जुड़ा है , जिसे चन्द्रमा अपने करों से बिखेर देता है , और फिर उस रमणी के सरोज लोचन वाले मुख को उठा कर वह चूम लेता है –

अङ्गुली भरिव केशसञ्चयं सन्निगृह्य ति मरं मरी च भ।:
कुडमलीकृतसरोजलोचन चुम्बतीव रजनीमुखं शशी॥

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 4, April- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

lUnHkZ (

1- ek fu"kkn ifr"BkUroexe% 'kk'orh% lek%A ;RØkS´pfeFkqukn deo/kh%
dkeekfgreAA jkek;.kAA 1-2-15AA
2- l /;kl ; Unjtuhinks"k/okUrokljk%A ikre/;kÊex;k'kyrq ou&lkxjk% AA
lkfgR;nil.kAA 6- 322AA uxjk.ko'kyrj&pUækdk n;&o.kku%A
m|kulfyyØhMke/kqikujrk Rlo%AA dk0;n'kAA 1-16AA
3- rVLFkk'pfUndk&/kkjkxg&pUnkn;kofiA dkfdykykiekØUneUnek#r"kV;ink%
AA yrke.Mi&Hk xg&nhf/kdk&tynkjok%A ikLknxHk&l
xhr&ØhMkfæ&lfjnkn;%AA jlk.kolkj] i"B 188&89AA
4- ';kekLox pfdrgfj.khi {k.k nf"Vikr] oD=PNk;k 'kf'kfu f'kf[kuk
cgHkkj"k d'kkuA mRi';kfe iru"k unhohfp"k Hkfoyklku]
gUrdfLeUDofpnfi u r pf.M lkn';efLrAA e?knrAA 2- 46AA